दादा भगवान परिवार का

अप्रैल - २०२०

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस

जगत् कौन चलाता है?

संपादकीय

बालमित्रों,

बचपन से ही हम ऐसा मान लेते हैं कि भगवान इस दुनिया को चलाते हैं। और वे आकाश में बैठे-बैठे इस दुनिया को चलाते हैं।

यदि आप भी ऐसा ही मानते हो तो आपको इस अंक को पढ़ने की खास ज़रूरत है।

यह रहस्य जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक नहीं जान पाए, वह परम पूज्य दादाश्री हमें एकदम ही सीधी और सरल भाषा में समझा देते हैं। अरे, आप भी समझ जाओ इतने सीधे तरीके से।

विश्वास नहीं होता न? त्ब

तो शुरू करें इस अंक को पढ़ना?

- डिम्पल भाई मेहता

वर्ष : ७ अंक : १२
अखंड क्रमांक : ८५
अप्रैल - २०२०

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

यह तो नई ही बात है !

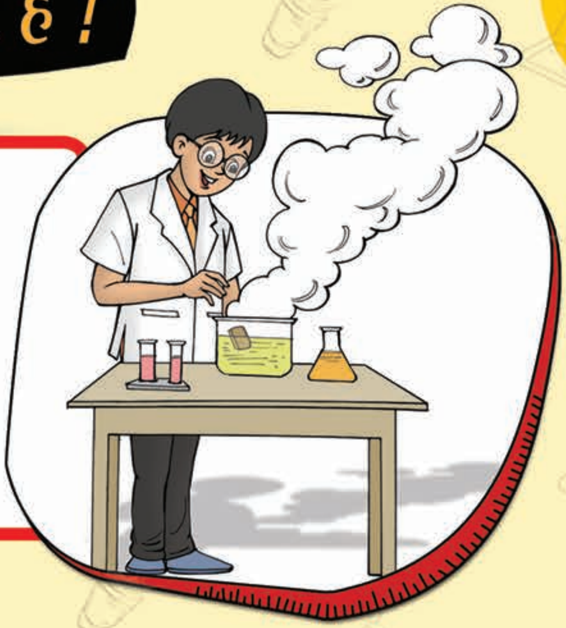

यदि सोडियम धातु को पानी में डालते हैं तो प्रज्वलित हो उठता है, वह साइन्स से समझा जा सकता है। इसी तरह यह दुनिया साइन्स से उत्पन्न हुई है।

यदि काँच का ग्लास हाथ से गिर रहा हो तो उसे अंत तक बचाने का प्रयत्न करना है। फिर भी गिर गया और फूटा, तो किसी की भूल नहीं देखनी है। जिसके हाथ से गिरा उसने तोड़ा ऐसा नहीं कहा जाएगा। उस बेचारे ने तो बचाने का बहुत प्रयत्न किया।

दादाजी कहते हैं...

दादाश्री - यह दुनिया कौन चलाता है, जानते हो? कोई बाप भी नहीं चलाता। हम भी नहीं चलाते और भगवान भी नहीं चलाते। यदि भगवान चलाने जाए न तो भगवान थक जाए। यह तो सब नैचुरल एडजस्टमेन्ट है सिर्फ। जब कई संयोग (कारण) मिलते हैं, तब एक कार्य होता है। उ.दा. आम पकता है तो किसने पकाया होगा? यह तो कितने संयोग मिलते हैं तब आम पकता है।

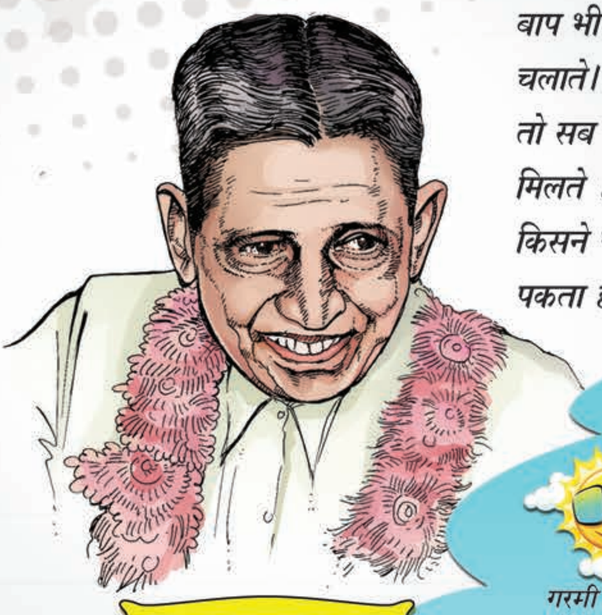

कई संयोग अर्थात्

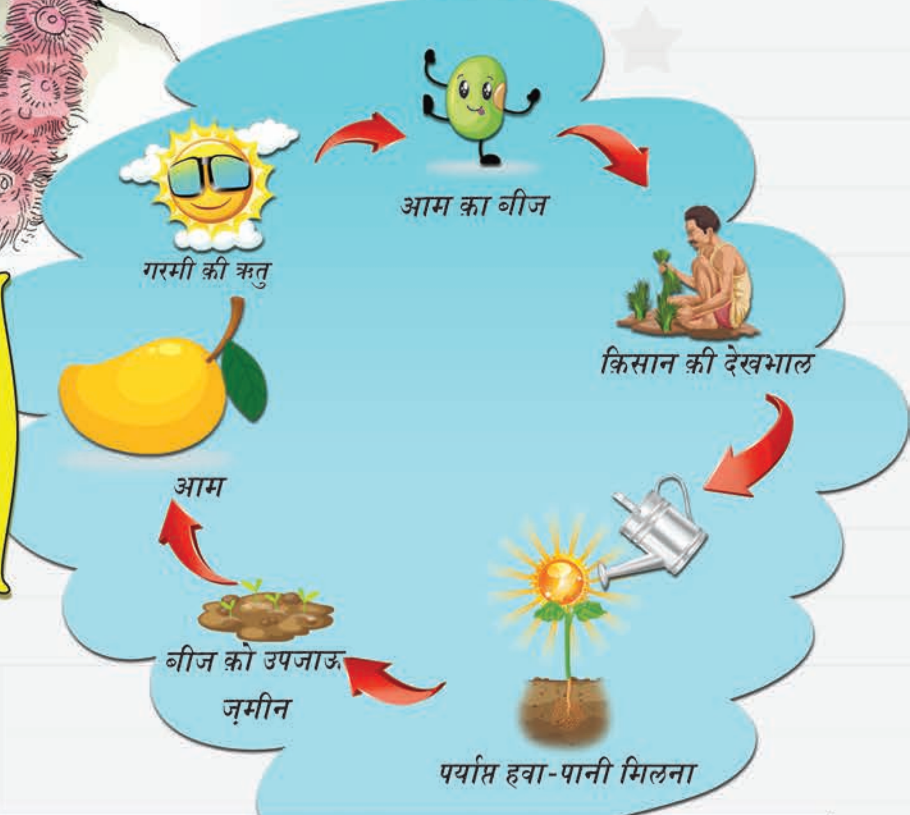

Song सुनकर रहस्यों के उकेल ढूंढो Scan QR Code

https://kids.dadabhagwan.org/gallery/music/All+Albums/rahasyo/

कई संयोग मिलते हैं तब आम पकता है और हमें खाने मिलता है। इसमें यदि सूर्य अहंकार करे कि "मैं नहीं होता तो ऐसा नहीं होता," तो वह अहंकार गलत है। क्योंकि बाकी कुछ अच्छा नहीं होता या ज़मीन उपजाऊ नहीं होती तो भी ऐसा नहीं होता और यदि किसान को इसकी जानकारी नहीं होती तो भी नहीं होता।

जब झरने का पानी ऊपर से गिरता है तब बुलबुले दिखते हैं, वे कितनी तरह के होते हैं? कोई अर्ध गोल होता है, कोई छोटा होता है, बड़ा होता है, वह किसने बनाया? किसने रचना की? वे तो अपने आप ही बन गएँ। हवा, फोर्स से गिरता पानी, पानी में बनने वाली लहरें आदि बहुत कुछ इकट्ठा होता है, तब बुलबुले बनते हैं।

खुद को पहचानों !

१) गन्ने में से चीनी बनने में कितने ही संयोग का इकट्ठा होना ज़रूरी होता है?

---

२) अरे, आप रोज़ समय से स्कूल पहुँचते हो, वह कौन पहुँचाता है?

प्रश्नकर्ता : तो फिर जब सभी के मिलने से ही होगा तो मुझे क्या करना है, ऐसा बोल सकते हैं?

दादाश्री : ऐसा बोल ही नहीं सकते। सभी कारणों में हमारा भाव भी एक कारण है। हमें निश्चय करना है कि हमें समय से स्कूल पहुँचना ही है। फिर धीरे-धीरे सभी कारण इकट्ठे हो जाते हैं।

एक अविस्मरणीय सफर

धड़ाम... क्रिकेट बेट के धक्के से दरवाज़ा दीवार से ज़ोर से टकराया।

सम्यक् की खुशी का पार नहीं था,"डैडी... डे...डी"

मम्मी ने रसोईघर में से कहा, "वे ऊपर के रूम में हैं, सम्यक्।" आज सम्यक् को एक मंजिल की सीढ़ियाँ भी रोज़ से ज्यादा लंबी लगीं। उसने डैडी के रूम का दरवाज़ा खोला और उल्लासपूर्वक कहा, "डैडी मैंने करके दिखा दिया।"

सम्यक् के डैडी, मयंक भाई एक वैज्ञानिक थे। उन्होंने अपनी रूम को लेबोरेटरी बना दिया था। फ्लास्क्स और टेस्ट ट्यूब से घिरे हुए मयंक भाई कागज़ पर कुछ लिख रहे थे।

"डैडी हमारी टीम जीत गई। मैंने अपनी टीम को जिता दिया। मैं बड़ा होकर क्रिकेटर बनूँगा।" सम्यक् अधीर होकर कह रहा था।

"अरे, वाह! बहुत अच्छा।" डैडी ने सिर उठाए बिना ही जवाब दिया। सम्यक् का एक्साईटमेन्ट थोड़ा कम हुआ। उसने आस-पास नज़र घुमाई और फिर डैडी के पास जाकर खड़ा हो गया।

"क्या लिख रहे हो, डैडी?" सम्यक् को आतुरता हुई।

"मेरी नई खोज़बीन के बारे में" डैडी ने कहा।

"और वह किसके बारे में है?"

"दुनिया कौन चलाता है?" डैडी ने हँसकर जवाब दिया। उन्होंने अपना लिखना पूरा किया और अपने बेटे के सामने प्यार से देखा।

सम्यक् बोल उठा, "दुनिया तो भगवान चलाते हैं। वह तो मुझे भी पता है।"

"भगवान यह दुनिया नहीं चलाते हैं।" डैडी ने विश्वासपूर्वक कहा।

"क्या? तो यह दुनिया कौन चलाता है?" सम्यक् को आश्चर्य हुआ।

डैडी को सम्यक् की आवाज़ में सही बात समझने का उत्साह दिखा।

"चल, मैं तुझे एक सफर करवाता हूँ।" डैडी ने जेब में से एक रिमोट जैसा गेजेट निकाला।

सम्यक् उत्साह में आ गया। मयंक भाई ने एक बटन दबाया और स्पेसशिप जैसे आकार का एक पारदर्शक बॉल बड़ा होने लगा।

"इस बॉल की खूबी यह है कि जैसे ही हम इसके अंदर जाते हैं कि तुरंत ही एक मिट्टी के रजकण के बराबर छोटे हो जाते हैं। उसकी पारदर्शकता की वजह से अंदर रहते हुए बाहर का सब देखा जा सकता है। इतना ही नहीं, लेकिन बाहर के लोगों के लिए यह बॉल इन्विज़िबल (दिखे नहीं ऐसी) है। मैं उसे श्रिन्किंग (संकुचित हो जाए) बबल कहता हूँ।" मयंक भाई ने अपनी विशेष खोज़बीन की खूबियाँ दिखाई।

सम्यक् के छोटे से दिमाग़ में कई प्रश्न खड़े हो गए लेकिन वह इतना आश्चर्यचकित हो गया था कि कुछ भी पूछ नहीं पाया। कुछ ही क्षणों में गजेट में से प्रकाश का एक किरण निकला और दोनों किसी शक्ति के प्रभाव से श्रिकिंग बबल की अंदर खिंच गए और छोटे से रजकण जैसे बन गए।

"सम्यक्, आज तक जो कभी नहीं की हो ऐसी एक अविस्मरणीय सफर के लिए तैयार हो जा। तुझे दुनिया के कुछ आश्चर्यों का आज अनुभव होगा।"

श्रिन्किग बबल खिड़की के बाहर खुली हवा में उड़ा। झिलमिल बारिश हो रही थी। लेकिन डैडी और सम्यक् श्रिन्किंग बबल में ज़रा भी भीगे बिना सलामत थे।

सम्यक् ने आतुरता से पूछा, "डैडी, हम कहाँ जा रहे हैं?"

तुझे इन्द्रधनुष बहुत पसंद है न?"

सम्यक् ने सिर हिलाकर हाँ कहा।

"तुझे क्या लगता है कि इन्द्रधनुष कौन बनाता होगा? क्या भगवान स्पेशल पेइन्ट ब्रश से यह बनाते होंगे या फिर इसकी हकीकत कुछ और ही होगी?"

"मैंने विज्ञान में सीखा है कि बरसात की बूंदें और सूर्य की किरणें इकट्ठी होने से ऐसा होता है।"

"सही बात है। चल, आज मैं तुझे इन्द्रधनुष की रचना दिखाऊँ वह देखकर तुम बताना कि इन्द्रधनुष की रचना में बरसात और पानी सिवा अन्य कौन-कौन से कारण सहभागी हैं?

श्रिन्कींग बबल स्पेस शिप हवा में खूब ऊँचा गया, तब मयंक भाई ने उसे खड़ा रखा। आकाश काले बादलों से घिरा हुआ था। कुछ समय इंतज़ार करने के बाद एक काला बादल हटा और सूर्य की रोशनी हुई। बरसात की बूंद में से सूर्य की किरण निकलते ही वह सात रंगों में बंट गई। ऐसी अनेक किरणें अनेक बूंदों में से निकलीं और फिर सात रंग वाला एक अर्ध गोलाकार पट्टा नीले आसमान में दिखाई दिया।

"वा...ह" सम्यक् का मुँह आश्चर्य से खुला ही रह गया। "जो बात मैंने बुक में पढ़ी थी वह आज मुझे देखने मिली। तो डैडी, सूर्य और बरसात की बूँदों के अलावा ये घूमते हुए बादल भी एक कारण कहे जाएँगे न?" सम्यक् ने पूछा।

"हाँ सम्यक्," डैडी ने हँसकर जवाब दिया, "और ऐसे कई दूसरे कारणों से इन्द्रधनुष की रचना हुई है। तुझे मिले न कारण?"

सम्यक् ने सिर हिलाकर "हाँ" कहा।

"हं... ठीक है तो हम दूसरी सफर करने के लिए चलते हैं।" सम्यक् के डैडी ने रिमोट पर बटन दबाया और श्रिन्किंग बबल उन्हें आगे ले गया। श्रिन्किंग बबल रास्ते में चलते हुए एक व्यक्ति के पास आकर खड़ा हो गया। बबल में से एक प्रकाश हुआ और दोनों ने उस व्यक्ति के शरीर के अंदर प्रवेश किया।

"यह व्यक्ति अभी लंच करके घर से निकला है। मानव शरीर की पाचन क्रिया के बारे में तुझे थोड़ी जानकारी तो होगी ही" डैडी बोले।

"हाँ, डैडी थोड़ी कुछ।" बबल ने लाल कत्थई रंग के माँस में से होकर पेट में प्रवेश किया।

"चल, तो आज लाइव पाचन क्रिया देखकर बता कि वास्तव में शरीर में खुराक का पाचन कौन करता है?"

सम्यक् ने खुराक किन-किन अवस्थाओं से गुजरता है, उसका ठीक से निरीक्षण किया। पाचक रसों की क्रिया, सभी अवयवों का कार्य... सम्यक् ने इन सभी का लिस्ट बनाया। और उसके मन में एक सवाल उठा।

"डैडी, इसमें मुझे कोई करने वाला नहीं दिख रहा है जो कहे कि ऐसा करो, वैसा करो, तो यह सब कौन कर रहा है? अब मैं ज्यादा इंतज़ार नहीं कर सकता। मुझे जानना है कि यह दुनिया कौन चलाता है?"

"घर जाकर तुझे तेरे सवाल का जवाब मिल जाएगा।" कहकर डैडी ने श्रीन्किंग बबल को घर की ओर जाने के लिए सूचना दी।

घर में एन्टर होते ही समोसे की सुगंध आई। और श्रीन्किंग बबल ने रसोई में जाकर सीधे ही समोसे वाले गर्म तेल में डुबकी लगाई। सम्यक् जल जाने के डर से डैडी को लिपट गया, लेकिन श्रीन्किंग बबल की विशेषता के कारण उन्हें कुछ नहीं हुआ।

और डैडी ने पूछा, "सम्यक्, मुझे बता कि ये समोसे कौन बनाता है?"

"मम्मी", सम्यक् ने तुरंत ही जवाब दिया।

डैडी ने उसे एक स्माइल देकर कहा, "ध्यान से देखकर बता।"

उसी समय मम्मी ने समोसा बनाकर गर्म तेल में रखा। उबलते हुए तेल में समोसे का रंग बदल गया। और उसे बाहर

निकालकर मम्मी ने प्लेट में रखा।

सम्यक् सबकुछ ध्यान से ऑब्ज़र्व कर रहा था। "तेल, आटा, आलू का मसाला, गेस... और मम्मी, इन सभी संयोग के कारण समोसे बने।" उसने बराबर सोचकर जवाब दिया।

"तो बता, सबकुछ कौन करता है?" डैडी ने सम्यक् से पूछा।

"भगवान इस दुनिया को नहीं चलाते। बहुत सारे संयोग इकट्ठे होने से कोई एक कार्य होता है। फिर, इन्द्रधनुष की रचना हो या समोसे बनाने का कार्य, एम आई राइट डैडी?"

"यस, माय सन!"

सम्यक् को आनंद हुआ। डैडी श्रिन्किंग बबल को लेबोरेटरी में ले गए। श्रिन्किंग बबल से बाहर निकलकर दोनों अपने असली रूप में आ गए।

सम्यक् की नज़र बेट पर पड़ी और उसके मन में विचार आया, "डैडी... तो इसका मतलब यह हुआ न कि वास्तव में मैंने अकेले ने टीम को नहीं जिताया था, लेकिन वह अनेक कारणों का परिणाम था?"

"तुझे क्या लगता है?" डैडी ने सामने से प्रश्न पूछा।

"हाँ डैडी, एक टीम के रूप में हम सबकी मदद से जीते थे। हमारे पास अच्छे बैट-बॉल थे, हम सभी की हेल्थ अच्छी थी, सभी प्लेयर्स ने अच्छे प्रयत्न किए थे। ऐसे तो बहुत से कारण थे।"

"बहुत अच्छा, अब मेरा बेटा एक वैज्ञानिक की तरह सोचने लगा है।"

"लेकिन डैडी... मुझे अभी भी सवाल होता है कि यदि सब ऐसे संयोग इकट्ठे होने से ही चलता है तो फिर मेरे खेलने से या नहीं खेलने से क्या फर्क पड़ने वाला है?"

"तेरा सवाल बहुत अच्छा है, बेटा। संयोग इकट्ठे होने के बाद परिणाम क्या आएगा यह तो हमें पहले से पता नहीं होता है। इसलिए, हमारा रोल यह है कि अंत तक पॉज़िटिव रहकर हमें अपना काम करना है। इसलिए, टीम को जिताने के लिए तुझसे हो सकें उतने प्रयत्न करने चाहिए। समझ में आया तुझे?"

"यस डैडी!!" सम्यक् के चहेरे पर सच्ची समझ प्राप्त होने का आनंद था।

तभी मम्मी की आवाज़ सुनाई दी, "समोसे तैयार हैं।"

और तुरंत ही सम्यक्, स्वादिष्ट समोसे का आनंद लेने के लिए दौड़कर नीचे आ गया।

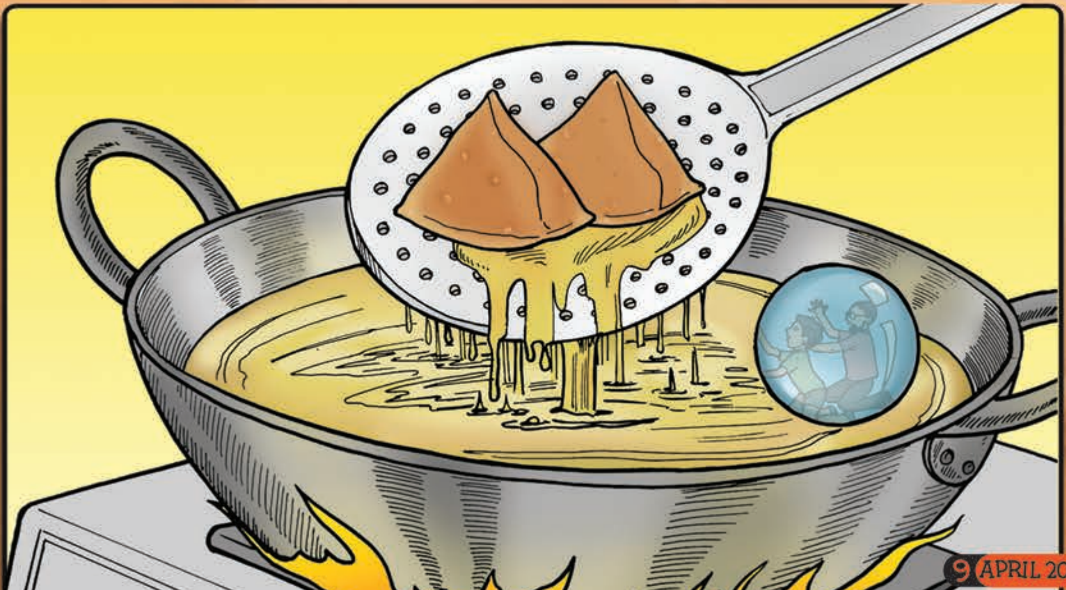

ज़िम्मेदार कौन?
लीली और सेली समुद्र में दौड़-पकड़ खेल रहीं थी। खेलते-खलते सेली महल में की ओर भागी
और धड़ाम से दादी माँ के साथ टकरा गई। दादी का मोती का हार टूट गया।
ओह नो! वेरी सॉरी दादी। भूल से टकरा गई।
तुम दोनों मेरे कमरे में आओ।
अब तो अपनी आ बनी। यह तो दादी को विरासत में मिला कीमती हार था।
तुम दोनों को लगी तो नहीं है न?
लीली और सेली ने सिर हिलाकर "मना" किया।
कल तुम दोनों सोलह साल की हो जाओगी इसलिए अब तुम्हें समुद्र की सपाटी पर जाकर दुनिया देखने की परमिशन है। फ्लोरा तुम्हारे साथ आएगी।

"वाह, दादी। लेकिन एक बात पूछूँ? हमने आपका हार तोड़ दिया फिर भी आपको हम पर गुस्सा नहीं आया?"
नहीं, क्योंकि मुझे पता है कि इसके पीछे बहुत सारे कारण ज़िम्मेदार थे। सिर्फ तुम ही नहीं हो।
कारण? यानी?
हार का धागा ढ़ीला हो जाना, महल में प्रवेश करने का हमारा टाइमिंग मेच होना और हमारा टकराना, हार टूटने के समय का होना। और खास तो हार तोड़ने का तुम्हारा कोई इरादा भी नहीं था न?
हाँ, दादी।
हमेशा याद रखना। किसी एक कार्य के पीछे बहुत सारे कारण ज़िम्मेदार होते हैं। किसी एक को ज़िम्मेदार समझकर उसे दोषित नहीं देखा जाता।
दूसरे दिन,
आज एटलान्टिक सागर में से रॉयल केरेबियन जहाज निकलने वाला है। उसे देखने के लिए हमें शोर्ट कट लेना पड़ेगा।
ओह वाउ! थेंक यु, फ्लोरा... लेट्स गो!!
अभी तो थोड़े मील आगे गए थे तभी...
शा...र्क!! लीली, सेली खड़े रहो। चलो, हम यह पत्थरों के पीछे छूप जाते हैं।

थोड़ी देर रुककर लीली और सेली पत्थरों से बाहर निकलने लगे।
नहीं, नहीं... इंतज़ार करो। शार्क को और आगे निकल जाने दो।
अंत में फ्लोरा ने अनुमति दी... समुद्र की सपाटी पर पहुँचकर देखा तो आसपास कुछ भी नहीं दिखा।
ओह नो... लगता है कि रॉयल केरेबियन जहाज निकल गया। यह सब तुम्हारी वजह से हुआ फ्लोरा।
सचमुच...! शोर्ट कट लेने की क्या ज़रूरत थी?!
नाराज़ होकर लीली और सेली महल में चली गईं।
काश! हमें रॉयल केरेबियन जहाज देखने मिला होता!
अचानक लीली की नज़र दादी माँ के टूटे हुए मोती के हार पर पड़ी।
सेली, याद है कल दादी ने हमसे कहा था कि हर एक कार्य के पीछे बहुत सारे कारण होते हैं?
हाँ... हम रॉयल केरेबियन जहाज नहीं देख पाए उसके पीछे क्या-क्या कारण हो सकते हैं? हम... फ्लोरा का शोर्टकट पसंद करना और उसी समय वहाँ शार्क का आ जाना...

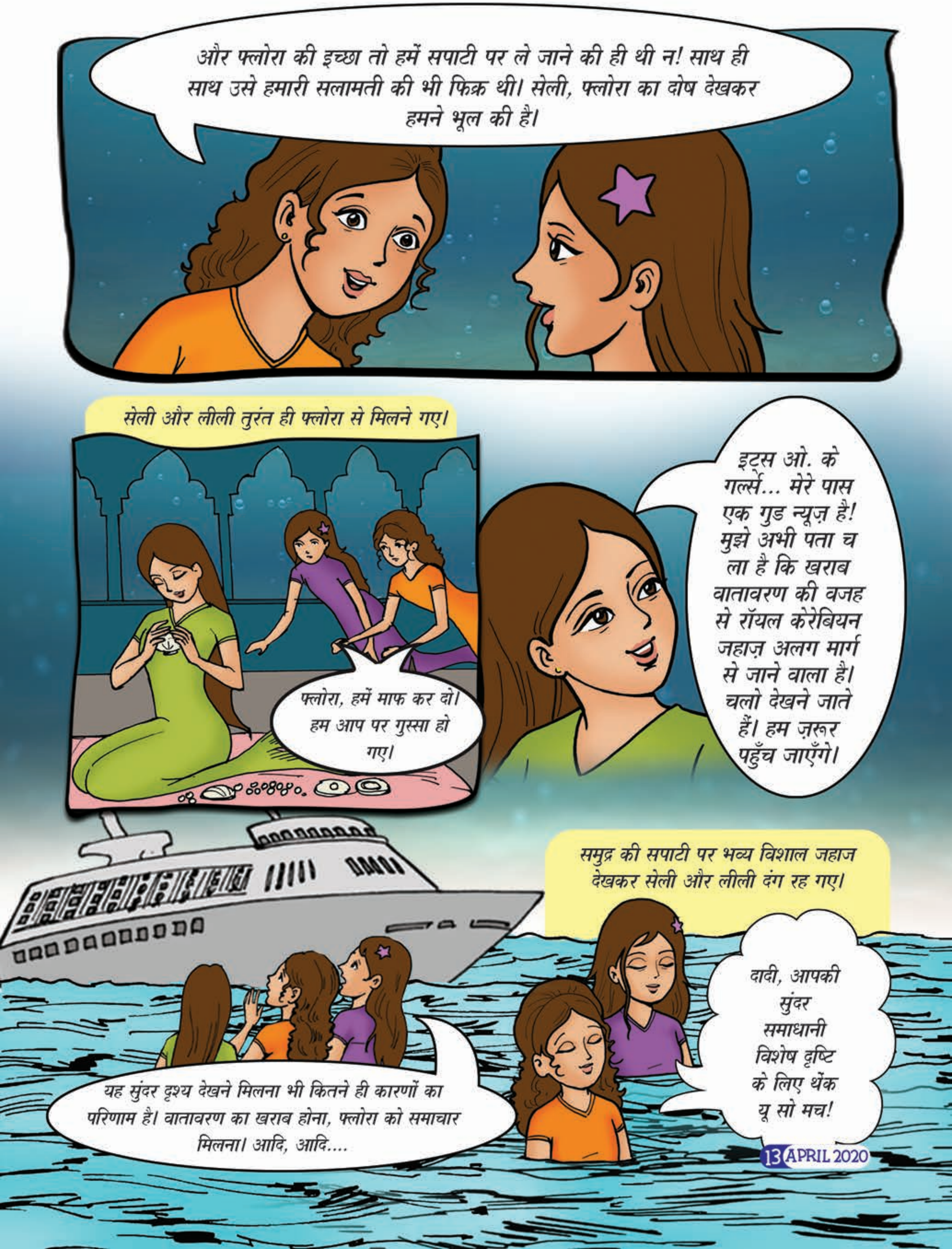
और फ्लोरा की इच्छा तो हमें सपाटी पर ले जाने की ही थी न! साथ ही साथ उसे हमारी सलामती की भी फिक्र थी। सेली, फ्लोरा का दोष देखकर हमने भूल की है।
सेली और लीली तुरंत ही फ्लोरा से मिलने गए।
फ्लोरा, हमें माफ कर दो। हम आप पर गुस्सा हो गए।
इट्स ओ. के गर्ल्स... मेरे पास एक गुड न्यूज़ है! मुझे अभी पता चला है कि खराब वातावरण की वजह से रॉयल केरेबियन जहाज़ अलग मार्ग से जाने वाला है। चलो देखने जाते हैं। हम ज़रूर पहुँच जाएँगे।
समुद्र की सपाटी पर भव्य विशाल जहाज देखकर सेली और लीली दंग रह गए।
यह सुंदर दृश्य देखने मिलना भी कितने ही कारणों का परिणाम है। वातावरण का खराब होना, फ्लोरा को समाचार मिलना। आदि, आदि....
दादी, आपकी सुंदर समाधानी विशेष दृष्टि के लिए थेंक यू सो मच!

TEA TIME

क्या आप चाय बना सकते हो?

चाय बनाने के लिए आपको जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है, उनके चित्र आपके ड्रॉईंगपेपर पर बनाकर उस चित्र का नाम लिखिए।

Name - ______________________ Age- ___ Mo. No.- __________

पतीला

____ ____ ____

____ ____ ____ ____

____ ____ ____ ____

और अब आप ही तय कीजिए कि चीज़ों (संयोगो) के बिना आप चाय बना सकते हो?

आपके बनाए हुए चित्र का और आपकी बनाई हुई चाय के साथ का आपका फोटो खींचकर हमें २२ अप्रैल २०२० तक Whatsapp 8155007480 या akramexpress4kids@gmail.com ई मेल कीजिए।

TEA TIME

Winner

फ्रेन्ड्स, जिनका ड्रॉईंग बेस्ट होगा उन्हें गिफ्ट भी मिलेगी।

1st prize

2nd prize

3rd prize

रियल लाइफ स्टोरी

रोज़मर्रा के जीवन में वेलक्रो का उपयोग चीज़ों में देखने को मिलता है। जैसे कि शूज, पर्स आदि... चलिए जानते हैं वेलक्रो की खोज के पीछे की हकीकत....

१९४८ में एक स्विस इंजीनियर और पर्वतारोहक ज्योर्ज मेस्ट्राल अपने कुत्ते के साथ जंगलों में ट्रेकिंग करने गए थे। घर वापस आकर उन्होंने देखा कि बर नामक वनस्पति के काँटे वाले बीज उनके कपड़े में चिपक गए थे। उन्हें अचानक विचार आया कि इसका उपयोग चीज़ों में काम के लिए किया जा सकता है। उन्होंने माईक्रोस्कोप की मदद से उन काँटे वाले बीजों की जाँच की। उन्हें पता चला कि उस बीज के

आसपास बिलकुल ही छोटे-छोटे हुक होते हैं जिनकी वजह से वे कपड़ों के धागे पर चिपक गए थे। करीब आठ साल तक उस पर रिसर्च और अभ्यास करने के बाद उन्होंने एक खोजबीन की जो आज वेलक्रो के नाम से जानी जाती है। "वेलवेट" और "क्रोसेट" इस दो शब्दों के मिलने से उसका नाम "वेलक्रो" रखा गया। वेलक्रो में कपड़े की दो पट्टियाँ होती हैं। एक में अतिशय छोटे हज़ारों हुक होते हैं और दूसरे में अतिशय छोटे हज़ारों लूप होते हैं। जिसकी वजह से दोनों पट्टियाँ एक दूसरे के साथ मज़बूती से चिपक सकती हैं और सरलता से खुल भी सकती हैं।

वाह! कितने संयोग देखने मिले। एक कुत्ता, बर नामक काँटे वाले बीज, एक वैज्ञानिक जो पर्वतारोहक भी था।

इस दृष्टि से देखें तो दुनिया कितनी अद्भुत और आश्चर्यजनक लगती है?

कोई भी कार्य होने के पीछे एक ही व्यक्ति ज़िम्मेदार नहीं होता लेकिन बहुत सारे संयोग इकट्ठे होकर कार्य होता है।

कंचनपुर नामक एक नगर था। वहाँ शुभंकर नाम के एक सेठ रहते थे। वे नियम से जिनपूजा (महावीर की पूजा), गुरु वंदना आदि धार्मिक कार्य करते थे।

एक दिन सुबह की जिन पूजा के समय उन्हें एक अनोखी सुगंध आई। ध्यान दिया तो पता चला कि यह सुगंध रंग मंडप में रखे हुए दिव्य अक्षत (चावल का पूरा दाना) की तीन ढेरी में से आ रही है।

उन्होंने सोचा, "ये चावल तो अद्‌भुत लग रहे हैं। यदि इन चावल को पकाकर खाया जाए तो कितनी मज़ा आएँ? इसका स्वाद तो दाढ़ में रह जाएगा।" "लेकिन देरासर में भगवंतों को चढ़ाए हुए चावल किस तरह ले जाए?" उन्होंने बहुत सोचा। फिर उन्हें एक युक्ति सूझी।

शुभंकर ने उतने ही प्रमाण के चावल अपने घर से लाकर, उन सुगंधित चावलों के साथ बदल दिए और सुगंधित चावल को अपने घर ले आया।

इस तरह चोरी किए बिना चावलों को घर लाकर उसने उनकी खीर बनाई। उस खीर की सुगंध इतनी ज़बरदस्त थी कि खाते-खाते शुभंकर खुश हो गया।

उसी समय एक तपस्वी मुनि भिक्षा लेने उनके घर पधारे। शुभंकर ने भक्ति भाव से सुगंधित च ावल की खीर मुनि को दी। मुनि खीर लेकर

ऐतिहासिक गौरवगाथा

उपाश्रय की ओर जाने लगे।

खीर में से आने वाली चावल की सुगंध ने तो मुनि को भी नहीं छोड़ा। मुनि सोचने लगे, "इस सेठ का भाग्य कितना ज़बरदस्त है! इतना स्वादिष्ट और मन को हर ले ऐसा व्यंजन उन्हें रोज़ खाने मिलता होगा! और में साधु बन गया इसलिए मुझे तो जो मेरे भाग्य में आए वही खाना पड़ता है। ऐसी अनोखी खीर तो बहुत कम खाने मिलती है।"

ऐसे कुविचारों के साथ मुनि उपाश्रय पहुँचे। वहाँ उन्हें वापस कुविचार आया, "इस खीर की सुगंध लेने के बाद, यदि गुरुजी सारी खीर खा जाएँगे तो?"

मुनि के मन में ऐसी शंका होने की वजह से उन्होंनें वह खीर गुरु को दिखाए बिना खुद ही खत्म कर दी।

खीर खाते-खाते उन्हें एक ही प्रकार के विचार आते गएँ, "इस खीर का स्वाद उत्कृष्ट है। आहाहा... मुझे तो स्वर्ग जैसा सुख लगता है। दीक्षा लेकर, तप करके, मैंने तो इन सभी सुखों से खुद को वंचित रखा। सचमुच, भाग्यशाली तो वह है जिसे ऐसा स्वादिष्ट भोजन रोज़ प्राप्त होता है।"

इस तरह खीर का स्वाद लेकर मुनि सो गए। मुनि धर्म अर्थात् सुबह जल्दी उठकर सामायिक करना होता है। लेकिन दूसरे दिन मुनि जल्दी उठ ही नहीं पाए। यह देखकर उनके गुरु को शंका हुई, "यह शिष्य तो कभी इतना नहीं सोता। सामायिक, काउसग्ग कभी चूकता नहीं है। क्या हुआ होगा? लगता है उसने कोई अशुद्ध आहार ले लिया है।"

नित्यकर्म के अनुसार दूसरे दिन शुभंकर सुबह गुरु से मिलने आया। वह मुनि तो उस समय भी सो रहे थे। शुभंकर को भी मुनि को सोता देखकर आश्चर्य हुआ।

थोड़ी चिंता के साथ उन्होंने गुरु से कारण पूछा। गुरु ने गंभीर आवाज़ में जवाब दिया, "शुभंकर, कल यह मुनि भिक्षा ग्रहण करके सो गए फिर उठे ही नहीं हैं। उठाने के कई प्रयत्न किए लेकिन उठ ही नहीं रहे। यह ज़रूर किसी अप्रामाणिक खुराक का परिणाम है। उसका ही असर है।"

यह सुनकर शुभंकर को आश्चर्य हुआ। उन्होंने आश्चर्य भरे स्वरों में कहा, "कल तो इन मुनि ने मेरे घर से ही भिक्षा ली थी।"

गुरु ने कहा, "शुभंकर, आपने मुनि को जो आहार दिया था, वह शुद्ध और मुनि के लिए योग्य था न?"

"स्वामी, अशुद्धि का तो मुझे पता नहीं है।

लेकिन खीर जिस चावल की थी वह चावल मेरे घर के नहीं थे लेकिन देरासर से लाए हुए थे।"

ऐसा कहकर उन्होंने जो हुआ था वह साफ-साफ गुरु को बता दिया। यह सुनकर गुरु बोले, "शुभंकर, यह तो योग्य हुआ ऐसा नहीं कहा जाएगा। ऐसा करने से हमारी प्रगति नष्ट हो जाती है।"

"आहाहा... मुझे तो स्वर्ग जैसा सुख लगता है।"

बात पूरी करते हुए उन्होंने कहा, "शुभंकर, ऐसा करके तुमने बड़ा पाप किया है।"

"गुरु भगवंत! इसीलिए मुझे कल धन का बहुत नुकसान हुआ है।" शुभंकर ने अपनी भूल समझकर कहा।

गुरु ने कहा, "शुभंकर तुम्हें तो बाह्य संपत्ति का नुकसान हुआ है। लेकिन इन मुनि को तो अंदरूनी नुकसान हुआ है।"

शुभंकर ने फिर गुरु के कहे अनुसार प्रायश्चित किया। मुनि ने भी अपने कुविचार के लिए गुरु की आज्ञा अनुसार प्रायश्चित किया। गुरु ने अपने आशीर्वाद से शिष्य का पेट विशुद्ध बना दिया।

ज़वाब: दादाजी कहते हैं...

१) गन्ने में से चीनी बनती है तो कारखाने में कितनी मशीनें, मज़दूर और साहब सभी मिलकर काम करते हैं, तब चीनी बनती है।

२) अरे, आप रोज़ समय से स्कूल पहुँचते हो, वह कौन पहुँचाता है? आपको लगता होगा कि रोज़ जल्दी उठ जाता हूँ, इसलिए पहुँच सकता हूँ। लेकिन यदि स्कूल बस लेट हो जाए तो आप समय से पहुँच सकते हो? तो फिर स्कूल बस का भी संयोग है न?

Akram Express

April 2020
Year : 7, Issue : 12
Conti. Issue No.: 85

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

Happy Birthday

सीमंधर स्वामी

हे सीमंधर स्वामी प्रभु!
मेरा अगला जन्म आपके
चरण और शरण में ही रखना।
मुझे आपके जैसा ही बनाना।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर स्रूस करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025